M.A III SEMESTER CC-X

Q.I

अर्धमागधी आगम साहित्य

इकाई (3) उपासकदशाध्ययन

Q- उपासकदशाध्ययन का संक्षेप विवेचन करें

Ans- उपासकदशा → यह श्रुतांग में अध्ययन है। यह महावीर के जैन धर्म के उपदेश को नियम बताये गये है। जैन गृहस्थों के धार्मिक नियम समझाए गये है। ये उपासक अपनी धर्मसाधना में अत्यन्त संलग्न थे और नाना प्रकार की विघ्न-बाधाओं के आने पर भी अपनी साधना से च्युत न हुए। प्रथम अध्ययन में श्रावक के पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत एवं अन्य बारह व्रतों के अतिचारों का सुन्दर विवेचन किया है। आनन्द धनिक श्रावक है, उसके पास करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं की सम्पत्ति है। आनन्द ने भगवान महावीर से व्रत ग्रहण किए थे और परिग्रह तथा भोगोपभोग के परिमाण को सीमित कर धर्मसाधना में प्रवृत्त हुआ था। इसने बीस वर्ष की साधना द्वारा अवधिज्ञान प्राप्त कर लिया था। गौतम गणधर को इसके अवधिज्ञान के विषय में आशंका हुई और उसने अपनी शंका का समाधान भगवान महावीर से किया।

इस कथा में वाणिज्य ग्राम और कोल्लाग सन्निवेश के आस-पास रहने की चर्चा आयी है। कोल्लाग सन्निवेश में ज्ञातकुल की पोषधशाला थी यहाँ का कोलाहल वाणिज्य ग्राम तक सुनायी पड़ता था। अतएव वैशाली के समीप जो बनिया ग्राम और कोल्हुआ ग्राम है वे ही प्राचीन वाणिज्य ग्राम और कोल्लाग सन्निवेश है, दूसरे अध्ययन में कामदेव की कथा अन्य बातों में आनन्द की कथा के समीप ही है, पर पिशाच द्वारा उसकी दृढता की परीक्षा लेना और नाना प्रकार के उपसर्ग पहुँचाने पर भी उसका विचलित न होना

उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपकों द्वारा पिशाच की आकृति का चित्रण साहित्य की दृष्टि से महत्व पूर्ण है।

सातवें अध्ययन - में आजीविका सम्प्रदाय के उपासक सद्दालपुत्र को भगवान महावीर उपदेश देते है और आजीविका मत के प्रमुख सिद्धान्त नियतवाद का खण्डन करते है। इस अध्ययन में भगवान महावीर को महाब्राह्मण, महागोप, महासार्थवाह, महा धर्म - कथन और महानिर्यापक कहा गया है। जिससे उनकी विविध महावृतियों का परिज्ञान हो जाता है।

भगवान महावीर जो जो धर्म देशना में उपदेश दी वह इस प्रकार है: लोक का अस्तित्व है अलोक का अस्तित्व है, इसी प्रकार जीव - अजीव, बन्ध, मोक्ष पुण्य, पाप आस्रव, संवर, वेदना निर्जरा, अर्हत, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव नरक, नैरयिक, तिर्यंच योनी तिर्यंच योनिक जीव माता पिता, ऋषि, देव देवलोक सिद्धि सिद्ध, परिनिर्वाण - कर्मजनित आवरण के क्षीण होने से आत्मिक स्वस्थता - परम शान्ति, परिनिवृत - परिनिर्वाण युक्त व्यक्ति इनका अस्तित्व है।

श्रावक जीवन को उपासना की दृष्टि से महत्व प्रदान किया गया है। श्रावक भी उपसर्ग और परीषहों का विजयी हो सकता है। विषय-वस्तुओं का साहित्यक निरूपण पिशाच रूप प्रकृति का काव्यात्मक वर्णन किया है। कथाओं में तर्क का प्रवेश, संवाद तत्वों में तर्क का आधार ग्रहण किया गया है। यथा भगवान महावीर सद्दालपुत्र के समक्ष तर्क द्वारा नियतिवाद का खण्डन करते है। इससे स्पष्ट है कि प्रश्नोत्तर प्रणाली तर्क का रूप ग्रहण करने लगी थी

और ध्वनि विषय भी प्रविष्ट होने लगे थे।
मानव मनोविज्ञान का सार्वभौम-वार्तालाप में इस तत्व के बीज वर्तमान है। प्रियवस्तु या प्रियव्यक्ति की प्रशंसा कर देने से व्यक्ति प्रसन्न होता है। इस मनोविज्ञान के सिद्धान्त का उपयोग मंखलिपुत्र गोशाल गोशाल सद्दालपुत्र को प्रसन्न करने के लिए करता है। जब वह देखता है कि सद्दालपुत्र महावीर का श्रद्धालु हो गया है, तो उसकी श्रद्धा को दूर करने के लिए आरम्भ में महावीर की प्रशंसा कर सद्दालपुत्र का प्रियपात्र बनना चाहता है। इस प्रकार कार्यव्यापार में मनोविज्ञान का समावेश नियम मान है।

जीवन के कार्यव्यापारों का अधिक विस्तार हो चुका था। इसी कारण महावीर को महामाहन, महागोप महासार्थवाह आदि उपाधियों से विभूषित किया गया है।
प्राचीन भारत के सम्पन्न, वैभवपूर्ण और विलासी जीवन का सुन्दर निरूपण किया है।